

काम के घंटे बढ़ाना कितना सही ?



हाल ही में एल एण्ड टी कंपनी के चेयरमैन सुब्रमण्यन ने काम के घंटों को बढ़ाए जाने की सिफारिश की है। उन्होंने चीन से तुलना करते हुए कहा है कि भारत को एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए ऐसा करना चाहिए। वे काम के घंटों को बढ़ाकर 90 घंटे प्रति सप्ताह करने के पक्षधर हैं। क्या ऐसा करना उचित हो सकता है?

कुछ बिंदु -

- काम को घंटों पर नहीं, बल्कि उत्पादकता की गुणवत्ता पर आंका जाना चाहिए।
- काम जीवनयापन के लिए धन कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। अगर जीवन की आवश्यकताओं; यदि जैसे भोजन, मनोरंजन, स्वास्थ्य, सामाजिक मेल-जोल के लिए ही समय न बचे, तो ऐसा काम किसके लिए?
- चेयरमैन की सोच है कि भारत को महान बनाने के लिए ज्यादा काम करना चाहिए, तो यह नियंत्रण का एक ऐसा साधन है, जो युवाओं की स्वतंत्रता को छीन सकता है। भारत को नवाचार करने, कल्पना करने और जीने के लिए स्वतंत्रता की जरूरत है, काम के घंटे बढ़ाने की नहीं।
- हर जगह लोग कई तरह की प्रेरणाओं के लिए काम करते हैं। उसके अनुसार उन्हें काम के घंटों की आवश्यकता होती है। इसे राष्ट्र के विकास से जोड़कर देखना और घंटों को बढ़ाना उचित नहीं है।

विभिन्न समाचार पत्रों पर आधारित। 10 जनवरी, 2025